

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों में समानुभूति का विकास

सबा यासमीन*
हरप्रीत कौर जस**

मनोवैज्ञानिक विकास के लिए सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विचारों को फिर से समझना आज के समय में बहुत जरूरी है। कल्पनाओं को विकसित करने के लिए मौजूदा शैक्षणिक सिद्धांतों के अतिरिक्त वैकल्पिक विचारों पर भी विचार करना अत्यंत आवश्यक है। संतों के मनो-आध्यात्मिक विचार मनुष्य के अस्तित्व की जटिलताओं को हल करते हैं। कई मानवीय गुण में से एक गुण है समानुभूति, जो सामाजिक व्यवहार के लिए बहुत जरूरी है। जहाँ वर्तमान समय संघर्षों और टकरावों से भरा हुआ है, वहाँ समानुभूति की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है। ऐसे में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विचारों का उल्लेख करना कभी अप्रासंगिक नहीं होता। कबीर की आत्म-आलोचनात्मक दृष्टि और गुरु नानक के भक्ति मार्ग के विचार इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हैं। गुरु नानक ने समानता, सेवा और समुदाय को प्रारंभिकता दी और समानुभूति और सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया, वहीं कबीर ने आत्म-अवलोकन और आत्म-आलोचना को व्यक्तिगत सुधार और नैतिक विकास का आधार माना। इन विचारों से बच्चों में समानुभूति, आत्म-स्वीकृति और सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है। साथ ही ऐसे विचार हमारे आस-पास के प्राकृतिक परिवेश और भौतिक वस्तुओं के प्रति संवेदनशीलता एवं सहिष्णुता के भाव को भी बढ़ावा देते हैं। इस लेख में बताया गया है कि समानुभूति के माध्यम से बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहयोग और नैतिक जिम्मेदारी का विकास किया जा सकता है, जो उन्हें न केवल सजग एवं स्फूर्तिपरक बच्चों के रूप में विकसित करता है, बल्कि पूर्ण व्यक्तित्व और संवेदनशील नागरिक के रूप में भी विकसित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (खंड 4.28) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022 को 6–8 वर्ष के बच्चों (पृष्ठ 16) के विकास के लिए जरूरी बताया है। इस परिप्रेक्ष्य में समानुभूति का नवीनतम

मॉडल बनाने की जरूरत है, क्योंकि इसे मनोवैज्ञानिक गुण के रूप में विकसित करना आवश्यक है। शिक्षा में समानुभूति का एक सफल मॉडल न केवल सामाजिक अस्थिरता को दूर करने के लिए आवश्यक है, बल्कि

*पी-एच.डी. शोधकर्ता, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय 110 025

**एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय 110 025

समाज की भिन्नताओं और अनेकता का सम्मानपूर्वक आदर करने के लिए भी आवश्यक है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक बहुलता इस दिशा में अनुकरणीय उदाहरण है, किंतु कभी-कभी यह विविधता विवाद का कारण बनती है, जो सामाजिक समन्वय के लिए चुनौती के रूप में आ खड़ी होती है। समानुभूति, दूसरों के विचारों तथा अनुभवों की सराहना और उनके प्रति सम्मान के भाव रखने की क्षमता है। यह गुण जीवन को समृद्ध करता है और समाज में सहजता एवं सामंजस्य का संचार करता है। यह गुण एक व्यक्ति को न केवल अपने विचारों तक सीमित रहने से बचाता है, बल्कि दूसरों की भावनाओं और विचारों को भी समझने की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए, किसी कक्षा में ऐसे बच्चे भी होते हैं जो अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं, उनके प्रति समानुभूति का नजरिया अपनाना चाहिए और उन कारणों को पता लगाना चाहिए जिनकी वजह से वे बच्चे खुद को सशक्त रूप अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। अध्यापक, सहाध्यायी एवं परिजनों को उन बच्चों की स्थिति को समझना चाहिए और उन्हें उचित प्रोत्साहन देना चाहिए। इस तरह का दृष्टिकोण बच्चों को शिक्षा और जीवन के क्षेत्र में अपनी संपूर्ण क्षमता का प्रदर्शन करने में भी मदद करता है। समानुभूति को हम परकाया प्रवेश के विचार से भी समझ सकते हैं। समानुभूति का मतलब किसी को हीन मानकर दया दिखाना नहीं है। समानुभूति को स्वानुभूति के विचार से समझा जाना चाहिए। समानुभूति से आशय उस स्थिति से है जब हम किसी दूसरे की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं

को ठीक उन्हीं मानदंडों के आधार पर रखकर देखते हैं, जैसा कि हम स्वयं के लिए सोचते हैं। शिक्षा में समानुभूति को शामिल करना समाज में समरसता की स्थिति लाने के लिए एक मजबूत आधार बन सकता है। यह अध्यापक और बच्चों के मध्य एक ऐसा संबंध स्थापित करने की संभावनाएँ प्रस्तुत करने में सक्षम हैं, जो सिर्फ सिखाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि भावनात्मक और मानसिक समझ को भी बढ़ावा देता है। समानुभूति का यह मॉडल कक्षा में ही नहीं, बल्कि समाज के विस्तार में भी महत्वपूर्ण है। यह हमें भिन्नताओं को कैसे स्वीकार करना है, विवादों को सामंजस्यपूर्ण तरीके से कैसा हल करना है और मानवता के साझा मूल्यों को कैसे विस्तार देना है, सिखाता है। समानुभूति का यह दृष्टिकोण हमें उस समय सामंजस्य और एकजुटता की दिशा में मार्गदर्शन कर सकता है जब समाज तेजी से विभाजन और असहमति की ओर बढ़ रहा है। निष्कर्षतः समानुभूति न सिर्फ शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो हमें समाज में करुणा भाव और न्याय की ओर उन्मुख करता है।

समानुभूति की परिभाषा और महत्व

मानव के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है समानुभूति, जो हमें दूसरों के विचारों और अनुभवों को समझने और महसूस करने की क्षमता देती है। यह अन्य व्यक्ति की भावात्मक एवं मानसिक स्थिति को समझने और उनका सम्मान करने की क्षमता को बता सकता है। इसको सिर्फ किसी दूसरे के दुःख को समझने तक सीमित नहीं किया जा सकता है, बल्कि उसकी स्थिति को अनंत करने या उसे सहयोग देने

की इच्छा भी सिखाता है। शिक्षा क्षेत्र में समानुभूति का दायरा केवल बच्चों तक नहीं है; शिक्षकगण और अन्य संस्थागत सदस्यों के लिए इसे अपने व्यवहार में लाना आवश्यक है। समानुभूति शिक्षा को मानवीय स्वरूप देती है, जहाँ सभी बच्चे अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझने की कोशिश करते हैं। आज शिक्षकों एवं सभी विद्यालयकर्मियों के लिए यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि वे बच्चों की विविधता को न केवल समझें, बल्कि उनके साथ व्यवहार करने और उनकी भावनाओं का सम्मान करने की कला भी सीखें। सभी बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि और अनुभवों से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि में रह रहे बच्चे अपने शहरी सहपाठियों की तुलना में कई चुनौतियों का सामना करते हों। एक समानुभूतिपूर्ण शिक्षक, अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझकर, उन्हें सहयोगात्मक और समर्थन देकर शिक्षार्जन की राह को आनंददायी बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, समानुभूति, शिक्षकों को कक्षा प्रबंधन और उनके शिक्षण में सुधार लाने में भी मदद करती है। जब शिक्षक समानुभूति की अवधारणा को ठीक से समझते हैं तो इसका तात्पर्य है कि वे समझ पाते हैं कि बच्चों की व्यक्तिगत और सामाजिक पृष्ठभूमि उनकी शैक्षणिक प्रगति को कैसे प्रभावित कर सकती है और उसी के हिसाब से वे अपनी पढ़ाने की शैली में बदलाव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक समानुभूतिपूर्ण शिक्षक किसी विद्यार्थी की कमजोरी को सिर्फ अकादमिक कमजोरी नहीं मानेगा, बल्कि

उसके मानसिक और भावनात्मक हालात को भी समझने की कोशिश करेगा। शिक्षा समानुभूति के बिना सिर्फ सूचनाओं का आदान-प्रदान है। समानुभूति वह गुण है, जो शिक्षा को मानव के हित में केंद्रित करती है और व्यक्तिगत और सामूहिक विकास दोनों को बढ़ावा देती है। समानुभूति एक गुण है, जो शिक्षा के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हमें बेहतर इंसान बनने और एक बेहतर समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है।

प्रारंभिक शिक्षा में समानुभूति का महत्व

प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास में समानुभूति एक बहुत महत्वपूर्ण भावनात्मक कौशल है। इसके माध्यम से बच्चे अपने शिक्षकों और सहपाठियों के साथ निःस्वार्थ भाव वाले मजबूत रिश्ते बना सकते हैं। प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने में समानुभूति, सकारात्मक दृष्टिकोण और समावेशिता पर आधारित कक्षा परिवेश सृजित करने में सहायक सिद्ध होती है। यह स्थिति बच्चों को दूसरों के विचारों और भावनाओं की सराहना करने में मदद करती है, जिससे एक ऐसा समुदाय बनता है जहाँ सभी बच्चे सम्मानित समझे जाते हैं। समानुभूति के गुण वाला कक्षायी परिवेश जॉन डेवी के 'व्यावहारिक स्कूल' के विचार से भी मिलता है। यह भावनात्मक जागरूकता न केवल आपस में संबंधों को मजबूत करती है, बल्कि कक्षा में एक सहयोगी वातावरण भी बनाती है जहाँ मुश्किलों को आक्रामकता या बहिष्कार से नहीं, बल्कि विचार और देखभाल से हल किया जाता है। जब हम इस पर विचार करते हैं कि समानुभूति को प्रारंभिक शिक्षा में कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है,

तो हमारे सामने कई युक्तियाँ एवं उपाय आते हैं, जैसे शिक्षक अपने व्यवहार में समानुभूति का उदाहरण दे सकते हैं, जैसे कि बच्चों की भावनाओं का सम्मान करना, ध्यानपूर्वक सुनना और उनकी भावनाओं को स्वीकार करना जो कि फलंडर्स के कक्षा संवाद सिद्धांत के संदर्भ में लिया जा सकता है। साथ ही, बच्चों को कहानी सुनाना, अभिनय करना, समूह चर्चा करना जैसी गतिविधियों से दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलती है। बच्चे जब अलग-अलग दृष्टिकोण की खोज करते हैं और मानव भावनाओं की जटिलताओं की गहरी समझ रखना आरंभ करने लगते हैं तब वे पात्रों के अनुभवों पर विचार करते हैं या वास्तविक जीवन की स्थितियों पर चर्चा करते हैं। इस प्रकार समानुभूति और समझ कक्षा में एक सहायक, प्रेरक वातावरण बनाने में मदद करती है, जो बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने और भावनाओं को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। संघर्षों को सुलझाने या सहयोग को बढ़ावा देने से समानुभूति को बढ़ावा मिलता है। यह बच्चों की भावनात्मक नियंत्रण और आत्म-जागरूकता पर भी असर डालता है। जब बच्चे दूसरों की भावनाओं को समझने और सम्मान देने में सक्षम होते हैं, तो वे अपनी भावनाओं को भी अधिक रचनात्मक तरीके से नियंत्रित करना सीखते हैं। इस प्रकार, समानुभूति भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देती है, जो जीवन में सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है। गोलमन की इमोशनल इंटेलिजेंस थ्योरी के अनुसार, समानुभूति एक व्यक्ति की भावनाओं, दृष्टिकोण और विचारों को समझने में मदद करती है, जो सामाजिक जागरूकता का एक

भाग है। सकारात्मक संबंधों का आधार समानुभूति है, जो किसी को दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करती है। अगर हम समानुभूति आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता का विश्लेषण करें, तो यह स्पष्ट रूप से पाते हैं कि जो बच्चे समानुभूति का अभ्यास करते हैं, वे विविधता का सम्मान करने, अधिक नैतिक जिम्मेदारी लेने और दूसरों की मदद करने की भावना से ओत-प्रोत होते हैं। ये मूल्य उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास में मदद करते हैं, जिससे एक सहायतापूर्ण और समानुभूतिपूर्ण शिक्षण वातावरण बनता है।

संत कबीरदास की आत्म-आलोचनात्मक दृष्टि और प्रारंभिक शिक्षा में इसका महत्व

कबीरदास की आत्म-आलोचनात्मक दृष्टि, जो कि आत्म-ज्ञान और आत्म-सुधार पर आधारित है, प्रारंभिक स्कूल में बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण बच्चों को समानुभूति, प्रेम और समानता की समझ भी सिखाता है, साथ ही उन्हें अपनी कमियों को समझने और स्वीकार करने की शिक्षा भी देता है।

कबीरदास का प्रसिद्ध दोहा “बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोया जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय”। इस दोहे के द्वारा बच्चों को यह आदर्श गुण इस तरीके से सिखाया जा सकता है कि दूसरों की गलतियों और उनके दोषों पर उँगली उठाने से पहले अपनी कमियों को पहचानना कितना आवश्यक है। प्रारंभिक स्तर पर, बच्चों को यह सिखाना कि दूसरों की आलोचना करने के बजाय खुद को देखना अधिक लाभकारी और उत्पादक हो

सकता है। यह बच्चों को खुद को स्वीकार करने और सुधारने की दिशा में अग्रसर करता है। इसे प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों को कक्षा में अपने व्यवहार, दिनचर्या और आदतों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनसे कहा जा सकता है कि आज उन्होंने क्या अच्छा काम किया, क्या बुरा काम किया, कहाँ सुधार किया और कहाँ सुधार की जरूरत है। कबीर के अन्य कृति और संदेशों को कहानी कहने के सत्रों में शामिल किया जा सकता है, जो लोगों को समानुभूति और आत्म-आलोचना का महत्व सिखाते हैं। शिक्षकों को भी बच्चों के साथ नियमित चर्चा करनी चाहिए, जिसमें वे बिना किसी संकोच के अपनी गलतियों, अपनी कमियों और सीखने के अनुभवों को बच्चों को दिलचस्प ढंग से बढ़ी सरलतापूर्वक ये सिखाया जा सकता है कि गलतियाँ करना मानव जीवन का एक हिस्सा है और उनसे स्वीकार कर उनसे सीखना सबसे बड़ा गुण है। बच्चों को सहपाठियों के साथ छोटे-छोटे काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। कबीर का आत्म-आलोचनात्मक विचार बच्चों में करुणा और समानुभूति का विकास कर सकता है। जब बच्चे जानते हैं कि उनमें कमजोरियाँ हैं, तो वे दूसरों की त्रुटियों और संघर्षों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। यह भावना कक्षा में सहयोग और समावेश को बढ़ाती है। कबीर के इस विचार का उपयोग करते हुए शिक्षकों एवं बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि वास्तविक ज्ञान और सच्ची समझ अपने भीतर झाँकने और अपने व्यवहार को सुधारने से शुरू होती है। राह तथ्य सत्य है कि संत

कबीर के दोहे छोटी कक्षाओं के लिए पढ़ने दुरुह हैं पर उनके दोहों के सार को कहानी के रूप में प्रस्तुत करके उनमें सन्निहित गुण व संदेश बच्चों तक पहुँचाए जा सकते हैं।

गुरु नानक देव के भक्ति मार्ग की प्रारंभिक शिक्षा में प्रासंगिकता

गुरु नानक देव की शिक्षाएँ सामुदायिक समरसता, आत्म-आलोचना और भक्ति का अद्वितीय संतुलन दिखाती हैं। प्रारंभिक शिक्षा में उनकी शिक्षा को लागू करना बच्चों के मानसिक और आध्यात्मिक विकास में मदद कर सकता है, साथ ही उनके सामाजिक और भावनात्मक कौशल को भी सुदृढ़ कर सकता है। गुरु नानक देव ने समानता और समरसता का जो उपदेश दिया, उसे प्रारंभिक शिक्षा स्तर में भी लागू किया जा सकता है। उनकी 'लंगर' की परंपरा समानता और एकता का प्रतीक है। इस परंपरा से बच्चों के बीच सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से लागू किया जा सकता है, जैसे एक-दूसरे के साथ भोजन साझा करना, समूह परियोजनाएँ और कक्षा में सहयोगात्मक (टीम-वर्क) कार्य इत्यादि। प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर ही बच्चों को यह सिखाना अत्यंत अनिवार्य है कि सभी बच्चे समान हैं, भले ही उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, वे किसी भी धर्म से आते हों। गुरु नानक देव के अनुसार, 'किरत करो, नाम जपो और वंड छको', ये सिद्धांत बच्चों में सेवा-भाव और दान-भाव को जन्म दे सकते हैं। विद्यालय में बच्चों को छोटे-छोटे सेवा कार्यों में शामिल करना, जैसे पौधों की देखभाल करना, पानी देना, अक्षम एवं अशक्त के लिए उनकी जरूरत की सामग्री एकत्रित करना या स्कूल परिसर को

साफ-सुथरा रखना, उनकी सेवा भावना को बढ़ा सकता है। गुरु नानक का संवाद मॉडल बताता है कि मतभेदों के होते हुए बातचीत से समझौता और सुलह की जा सकती है। समूह चर्चा, समस्या-समाधान गतिविधियाँ और सहपाठियों के बीच विचारों का आदान-प्रदान प्रारंभिक कक्षाओं में संवाद को बढ़ावा दे सकते हैं। इस तरह की क्रियाएँ बच्चों को विचारशील बनाती हैं। नैतिक कहानियों और उदाहरणों के माध्यम से गुरु नानक की शिक्षाओं को बच्चों को सिखाया जा सकता है। बच्चों को विविधता को स्वीकार करना और दूसरों के प्रति समानुभूति विकसित करना उनकी जीवन यात्रा से सिखाया जा सकता है।

आत्म-स्वीकृति — जीवन का एक महत्वपूर्ण पथ

आत्म-स्वीकृति एक गहरी और भावुक प्रक्रिया है, जो किसी व्यक्ति को अपनी धारणाओं और फैसले को बिना किसी पूर्वाग्रह के स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है। यह न केवल हमारी आंतरिक दुनिया को समृद्ध और सुव्यवस्थित करती है, बल्कि बाहरी परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया को भी बेहतर बनाती है। आत्म-स्वीकृति का अर्थ है हर अनुभव को बिना किसी संकोच, आत्मग्लानि या तिरस्कार की भावना के स्वीकार करना। आत्म-स्वीकृति किसी भी व्यावसायिक परामर्श प्रक्रिया का एक प्रभावशाली नतीजा हो सकती है, जहाँ कुशल मार्गदर्शक हमें खुद के अंदर छिपे हुए विरोधाभास और मनोविकारों को समझने में मदद करते हैं। इसके बावजूद, यह प्रक्रिया सिर्फ चिकित्सीय सहायता के दायरे तक सीमित नहीं है, बल्कि रिश्तों के माध्यम से भी इसे हल किया जा

सकता है। व्यक्ति आत्म-अवलोकन, ध्यान और सकारात्मक आत्म-संवाद जैसे अभ्यासों के माध्यम से अपने-आपको बेहतर जानने और स्वीकार करने की दिशा में एक सफल प्रयास कर सकता है। शिक्षक कक्षा में आत्म संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया को शामिल कर सकते हैं। इसमें बच्चों को विनयपूर्वक खुद को निर्देश देने की प्रक्रिया का अभ्यास करवाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'हम को मन की शक्ति देना मन विजय करें'। आत्म-स्वीकृति एक व्यक्ति को आत्म-विश्लेषण और आत्म-संवर्धन की दिशा में मार्गदर्शन करती है। हम अपने अतीत को पूरी तरह स्वीकार करते हैं, इस प्रकार यह हमें खुद के प्रति दयालु और भावनात्मक रूप से जागरूक बनाती है। आत्म-स्वीकृति हमें अपने आत्म-संवेदनशील भाग को समझने और सशक्त बनाने में मदद करता है। न केवल मानसिक शांति का साधन है, बल्कि यह आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के लिए मूलभूत आधार प्रदान करती है।

वस्तुओं और प्रकृति से संबंध — आत्म-विस्तार की ओर एक कदम

अपने आस-पास की प्रकृति और वस्तुओं के साथ संबंध बनाना केवल बाहरी काम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के आंतरिक विकास और आत्म विस्तार का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह संबंध हमें यह समझने की प्रेरणा देता है कि वस्तुओं एवं प्रकृति के साथ हमारा जीवन परस्पर संबंधित है जो न केवल हमारी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी व्यक्त करता है, बल्कि इस संबंध को समझना और सम्मान देना भी सिखाता है। इस प्रक्रिया का एक आरंभिक बिंदु कक्षा

में वस्तुओं का उचित उपयोग और देखभाल करना हो सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चों को बताया जा सकता है कि पुस्तक, पेंसिल, उपकरण आदि केवल उपयोग की वस्तुएँ नहीं हैं; वे हमारी मेहनत और संसाधनों का उत्पाद हैं। इनकी देखभाल न केवल उनकी उपयोगिता को बढ़ाती है, बल्कि बच्चों में कृतज्ञता, नियमबद्धता और अनुशासन की भावना विकसित करती है। इस संबंध को प्रकृति से जोड़ना और भी गहरा बनाता है। विद्यार्थियों को पेड़-पौधों और प्राकृतिक परिवेश के महत्व को समझने और उनके संरक्षण की शिक्षा देना न केवल पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देता है, बल्कि एक विस्तृत विचारधारा को भी अपनाने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, प्रकृति पर आधारित परियोजनाएँ, वृक्षरोपण कार्यक्रम और पर्यावरण संरक्षण अभियान बच्चों को यह सिखाते हैं कि प्रकृति हमारी साथी है, न कि केवल एक संसाधन। प्रकृति से जुड़ना हमें इस बात का स्मरण कराता रहता है कि हम सिर्फ इस धरती के उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि हम संरक्षक भी हैं। जब बच्चे प्रकृति के साथ संवाद करना सीखते हैं, चाहे पौधे की देखभाल करके हो या बारिश की बूंदों को महसूस करके, वे जीवन की गहरी एकता को समझने लगते हैं, जो प्रकृति और मनुष्य के बीच मौजूद है।

यह आत्म-विस्तार का मार्ग है, जो हमें बताता है कि हम इस बड़े ब्रह्मांड का एक हिस्सा हैं और हमारे द्वारा की गई छोटी-छोटी क्रियाएँ भी इस बड़े चक्र में योगदान करती हैं। निष्कर्षतः बच्चों को वस्तुओं और प्रकृति के साथ संबंध बनाने का तरीका सिखाना, उन्हें

कर्तव्य निष्ठा, मर्मज्ञ और सचेत नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। यह संबंध उन्हें वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। यह जीवन-दृष्टिकोण हमें सह-अस्तित्व और संतुलन की ओर प्रेरित करता है, जहाँ हर वस्तु, जीव और अनुभव अपने आपमें मूल्यवान है।

निष्कर्ष

शिक्षा, समानुभूति और सांस्कृतिक दृष्टिकोण के संयुक्त बिंदु से यह साफ दिखाई देता है कि समानुभूति का विकास केवल एक शैक्षणिक प्रयास नहीं है, बल्कि मानवता को बनाए रखने की दिशा में एक गहरी यात्रा है। इस लेख ने यह स्पष्ट किया है कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शिक्षाओं को समकालीन शिक्षा में शामिल करना, अतीत की प्रासंगिकता को पुनः जागृत करने का प्रयास है। यह एक विकासशील गुण है, जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक चेतना को बढ़ाता है। आज के विविधता पूर्ण कक्षा-परिसरों की सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करने में, कबीर और गुरु नानक जैसे विचारकों की विचारधारा, आत्म-अवलोकन, समानता और सामुदायिक समरसता पर आधारित है। शिक्षा में समानुभूति को अपनाने से हम सिर्फ बच्चों को पढ़ाई में सफल बनाने के लिए नहीं काम करते, बल्कि एक ऐसे वातावरण बनाते हैं, जहाँ वे भावनात्मक रूप से दुनिया के साथ समन्वय बनाना सीखते हैं। यह दृष्टिकोण आत्म-स्वीकृति और पारस्परिक सम्मान पर आधारित है, जो एक संवेदनशील और समावेशी समाज का निर्माण करता है।

संदर्भ

- मंगल, एस.के. और एस. मंगल 2015. *इमोशनल इंटेलिजेंस — मैनिजिंग ईमोशन टू विन इन लाइफ*. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि., नई दिल्ली.
- यिलमाज, के. 2007. हिस्टॉरिकल एम्पथी एंड इट्स इम्प्लिकेशन फॉर क्लासरूम प्रैक्टिस इन स्कूल. *द हिस्ट्री टीचर*. 40(3), पृ.सं. 331–337. <http://www.jstor.org/stable/30036827>. file:///C:/Users/NCERT/Downloads/EMPATHYHistoricalEmpathyandItsImplicationsforClassroomPracticesinSchools.pdf
- रीस, एच. 2017. द साइंस ऑफ एम्पैथी. *जर्नल ऑफ पेशेंट एक्सपीरियंस*. 4(2), पृ.सं. 74–77. https://journals-sagepub-com.translate.google/doi/10.1177/2374373517699267?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
- सुथरलैंड, एम.बी. 1986. एजुकेशन एंड एम्पथी. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज*. स्कूल ऑफ एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स. <https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/00071005.1986.9973732>